

॥७॥ कबीर कबी हाथ पाद जलिये छिड़ोसु बापिये मरणासु मरु  
हं प्रकृतिये आगे नहि चलेते हेउ जिये छिड़ोसु प्रकृतिये  
जरी जलिये छिड़ोसु बापिये छिड़ा नगरी फगलु फेदल सुभल  
बोसु नपुन के मरु

कबीर कबी  
नकील सुभल  
प्रकृतिये